ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-36-38**,YEAR-2015

पशु–पक्षियों का मानव जीवन से सम्बन्ध

❑ **डॉ0 शिव कुमार वर्मा**

सारांश– *मानव व पशु–पक्षियों का सदा–सदा का साथ रहा है और यदि हम यों कहें कि पशु–पक्षी मानव के पूर्व भूपटल पर विद्यमान रहे हैं तो अतिशयोक्ति न होगी। वैज्ञानिक तो मानव को बंदर की सन्तान स्वीकार कर चुका है। अतः मानव अर्वाचीन है पशु या पक्षी प्राचीन। अब प्रश्न उठता है कि मानव ने पशु–पक्षी का संयोग कब प्राप्त किया? तो इस प्रश्न का सीधा उत्तर यही होगा कि जब मानव ने पृत्वी पर आगमन किया तभी से पशु–पक्षियों का साथ प्राप्त हो गया। अतः सिद्ध है कि मानव व पशु–पक्षियों का चोली–दामन का साथ रहा है। मानव का पशु–पक्षियों के साथ यह संयोग निरन्तर बढ़ता गया और मानव उसके नदजीक से नजदीक रहने लगा। मानव सबसे बुद्धिमान जीव था, उसने पशु–पक्षियों के इस संयोग की कहानी मानवता की प्रारम्भिक कहानी है।*

जब मानव का पशु–पक्षियों के साथ सम्पर्क हुआ तो उसके पारस्परिक सम्बन्ध बढ़े और मानव पशु–पक्षियों एवं पशु–पक्षी मानव से प्रेम करने लगे। यह प्रेम आगे चल कर इतना बढ़ गया कि वे एक दूसरे के सुख दुःख को भली भाँति समझने लगे एवम् उनके हृदय में सहानुभूति व प्रेम की भावना उपस्थित हुई। मानव का पशु–पक्षियों के साथ निरन्तर संयोग एवं प्रेमाधिक्य के अनेकानेक उदाहरण प्रारम्भिक संस्कृत ग्रन्थों से ही उपलब्ध होते रहे हैं। वाल्मीकि रामायण की रचना तो कवि के हृदय में क्रौञ्च पक्षी के प्रति सहानुभूति के कारण ही हुई। एक बार वाल्मीकि तमसा नदी पर स्नान करने के लिए जा रहे थे। उसी समय एक निशाद ने काम क्रीड़ा करते हुए क्रौञ्च पक्षी के जोड़े में से एक को मार डाला। उसे खून से लतफत देखकर उसकी भार्या क्रौञ्ची का करूण क्रन्दन सुनकर महर्षि वाल्मीकि का हृदय दुख से अभिभूत हो गया और उनके मुख से सहसा यह श्लोक निकल पड़ा–

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

अर्थात्– हे निषाद! तुमने काम मोहित जोड़े में से एक को मारा है। अतः बहुत दिनों तक तुम प्रतिष्ठा को मत प्राप्त कर सको। शाप देने के बाद ऋषि के मन में विचार आया कि एक पक्षी के लिए शोकार्त होकर मैं यह क्या कर डाला ? स्नान के उपरान्त उन्होंने शाप सम्बन्धी निकले हुए वाक्य पर पुनः पुनः विचार करते हुए मन ही मन अत्यन्त व्याकुल हो गय। उसी समय वहाँ ब्रह्मा जी प्रकट हुए और बोले– हे मुनि तुम्हारा वह वाक्य श्लोक ही था। अब इस विषय पर आपको अधिक विार न करते हुए भगवान श्रीराम के चरित्र का गान करना चाहिए। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण की रचना का प्रमुख कारण पक्षी–प्रेम रहा है। अतः सिद्ध है कि प्राचीन समय में मानव को पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम रहा है। इस वर्णन से यह प्रमाणित होता है कि कवि की अवलोकन शक्ति एवं पशु–पक्षी के प्रति प्रेम अत्यन्त तीव्र होती है। तभी तो महामुनि वाल्मीकि ने क्रौञ्च रूदन का इतना कारूणिक वर्णन प्रस्तुत किया है। वाल्मीकि रामायण में क्रौञ्च के अतिरिक्त अनेक स्थल ऐसे हैं, जिनमें मानव व पशु–पक्षी के प्रेम के प्रमाण मिलते हैं। उन सबका वर्णन करना तो यहाँ सम्भव नहीं किन्तु उनमें से कुछ बिन्दु इस प्रकार है–

1. राम के वनगमन पर अश्व का दुखी होना।
2. ऋक्ष एवं वानरों की उत्पत्ति।
3. भगवान राम का पशु–पक्षियों से सीता के

पूर्व शोध प्रज्ञ (संस्कृत), डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध वि0वि0, फैजाबाद, (उ0प्र0) भारत

विषय में पूछना।

4. जटायु से मित्रता।

5. गृध्रराज सम्पाती के दर्शन

इन सब वर्णनों से पशु–पक्षी के प्रति अनुराग के स्पष्ट दर्शन होते हैं। वाल्मीकि रामायण में निम्नलिखित पशु–पक्षियों से सम्बन्धित प्रकरण प्राप्त होते हैं–

उण्द्र, ऋक्ष, खर, गज, धेनु, गोलांगूल, गवय, चमर, बिडाल, महिष, मृग, मेष, रूरू, वानर, वृषभ, व्याघ्र, शश, श्रृंगाल, श्वान, सिंह, उलूक, कंक, कीर, क्रौञ्च, गृध, चक्रवाक, कोकिल, मयूर, वायस एवं सारस।

आधुनिक युग के पशु–पक्षियों का मानव जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध देखने में आता है। इनमें सबसे प्रधान सम्बन्ध है भोजन का। पृथ्वी पर अनेक देश ऐसे हैं जिनका सम्पूर्ण भोजन पशु–पक्षियों के मांस पर निर्भर करता है। जिन पशु–पक्षियों का मांस खाया जाता है उनमें से कतिपय के नाम इस प्रकार है–

अज, मेष, मृग, गो, गवय, शश, सूकर, मयूर, कबूतर, मुर्गा आदि। विश्व में शिकागो मांस की सबसे बड़ी मण्डी है। यहां से नित्य हजारों क्वींटल मांस का निर्यात होता है। मांस के अतिरिक्त अण्डे खाने का भी आजकल काफी प्रचलन है। अण्डों में मुर्गी के अण्डे अधिकता से खाये जाते हैं। अण्डे के अलावा दूध पशुओं से प्राप्त होने वाली सबसे आवश्यक वस्तु है। जिस पर सारा विश्व निर्भर है। दूध से अनेक प्रकार के खाद्य सामग्रियों का निर्माण होता है। यथा– मक्खन, घी, दही, छाछ, पनीर इत्यादि ये सभी वस्तुएँ मानव के दैनिक जीवन की आवश्यकताएँ बन गयी हैं। पशु–पक्षियों से अनेक ऐसी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं जो दवाइयों के रूप में हमारे काम आती हैं, जैसे– लकवे में लक्का कबूतर का मांस, पोलियो में गधे की लीद का पानी, सर्प दंश में ऊँट का पेशाब पान, फोड़े कबूतर का बीट, लीवर में गौमूत्र पान इत्यादि। पशु–पक्षियों से हमें अनेक उपयोगी वस्तुएँ भी मिलती है, जैसे–बाल, कस्तूरी, हाथी दांत, सरेस, मोर पंख इत्यादि। ऊटनी या भेड का दूध अनेक दवाइयों के काम आता है। इसके अतिरिक्त सभी पशुओं के चर्म, सींग, एवं खुर अनेक सजावटों के काम आते हैं। चमड़े के हैण्ड बैग, जूते, बेल्ट, हैट, कोट, सूटकेश, इत्यादि आज कल सर्वत्र देखे जा सकते हैं। पक्षियों से प्राप्त पंखों से अनेक सजावट की वस्तुओं का निर्माण होता है।

मानव व पशु–पक्षियों में नौकर मालिका का सम्बन्ध आज भी देखा जा सकता है। सवारी के लिए गज, अश्व, ऊँट, बैल, बारहसिंगा, भैंसा आदि का प्रयोग सामान्य है। बोझा ढोने में खर, ऊट, बैल, महिष व खच्चर का विशेष प्रयोग होता है। पक्षियों में शुतुर्मुग भी बोझा ढोने के काम आता है। पक्षियों में कबूतर, शुक सन्देश भेजने के साधन रहे हैं।

पशु–पक्षी मनोरंजन में भी मानव का सर्वदा साथ देते रहे हैं। घुड़दौड़ व कुत्ता दौड़ का आजकल बहुत महत्व है। गॉवों में रथ दौड़ भी अत्यन्त सामान्य है। सर्कस व सिनेमा में अनेक पशु पक्षियों के मनोरंजन कार्य देखे जा सकते हैं। मुर्गे की लड़ाई व भालू, बन्दर का नाच भी गाँवों में देखने को मिलता है।

इन विशेषताओं के कारण मानव व पशु पक्षी निकट आते जा रहे हैं। आजकल विश्व के सभी शहरों में चिड़ियाघर देखे जा सकते हैं। साथ ही अजायबघरों में मसाले भरकर मृत पशु–पक्षियों का संग्रह किया जाता है। पशु–पक्षियों के पालन पर आधुनिक युग में विशेष ध्यान दिया जाता है एवं उसकी रक्षा के लिए प्रयत्न किये जाते हैं। भारत में भी अनेक पशु पक्षियों को मारना कानूनी अपराध है। आज कल कुत्ते के पालने का बड़ा प्रचलन है। घर–घर में कुत्ते, मुर्गे, खरगोश, शुक, सारिका, बिल्ली इत्यादि का बड़े प्रेम से पालन किया जाता है एवं उनकी अने किस्मों का निर्माण किया जाता है। मनोरंजन के अतिरिक्त दूध, मांस व चमड़े के लिए तो मानव पशु–पक्षियों को पालता ही है, अनुसंधान कार्यों के लिए भी आजकल अनेक पशु–पक्षियों का पालन किया जाता है। भारतीय सरकार ने भी इसी कारण पशु–पक्षियों के उच्च स्थान दे रखा है। हमारे देश में मयूर को राष्ट्रीय पक्षी का स्थान दिया गया है एवं मयूर को मारना कानूनी अपराध है। सिंह भारत का राष्ट्रीय पशु है। अशोक चक्र को राष्ट्रीय चिह्न स्वीकार किया गया है, जिनमें ऊपर तीन सिंह एवं नीचे बैल एवं अश्व का चित्र अंकित है। सरकार ने स्थान–स्थान

पर वन संरक्षण के साथ–साथ पशु संरक्षण के भी प्रयास किये हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पशु–पक्षियों के अभाव में मानव जीवन अधूरी है। पशु–पक्षियों का मानव जीवन से बड़ा गहरा एवं नजदीकी सम्बन्ध है और यदि यों कहें कि पशु–पक्षियों के अभाव में मानव जीवन दुर्भर हो सकता है तो अतिशयोक्ति न होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकि रामायण।
2. वाल्मीकि रामायण कोश– वर्मा/परिशिष्ट।

*****